



फिजी। प्रवासी समुदाय के स्वागत समारोह के दौरान फिजी के प्रधानमंत्री सितिवेनी राबुका एवं भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के साथ उपस्थित रहे स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शांता बहन तथा अन्य गणमान्य लोग।

जब हम योग के गहराई की बात करते हैं तो उसके साथ-साथ योग की लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई का भी संबंध है। योग की गहराई अर्थात् उसका डीप अनुभव। ऐसा अनुभव जिससे हम लाइट-माइट के स्वरूप बन जाएं या कम से कम हमारी फरिश्ता स्टेज हो। लेकिन लम्बाई का संबंध है निरन्तर योग से। कितने समय से लगातार निरन्तर योग चला आ रहा है, वह भी देखना है। अगर हमारा योग निरन्तर नहीं होगा, बीच में टूटता रहेगा या बीच-बीच में गैप होगा तो योग की गहराई का अनुभव, जो हमें करना चाहिए, वह



राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

बीच में ऐसा विघ्न पड़ जाता है जो डिग्री, दो डिग्री या अपने-अपने अनुसार हम नीचे आ जाते हैं। योग का सारा पुरुषार्थ इसी बात पर निर्भर है कि हमारी जो चेतना है, वह क्या है? हमारी जो चेतना का स्तर है, जो हमारी अवेयरनेस है वह शिवबाबा की है या देहधारियों की है या वस्तुओं की है या पदार्थों की है। चेतना को हम दो भागों में बांट सकते हैं। एक-अभिचेतन, दूसरा, चेतन। अभिचेतन का अर्थ है- सूक्ष्म, जिसके लिए हम कह देते हैं- मेरा भाव ऐसे नहीं था, कई दफा हम कहते हैं कि हमारे अन्दर में यह बात नहीं

हमारे संस्कार हमारी एक्टिविटी, दृष्टि और शब्दों को प्रभावित करते...

नहीं हो सकेगा। इसलिए बाबा कहते हैं कि कम से कम 8 घंटा योग हो। तो इसके लिए हमें योग की लम्बाई का ख्याल रखना चाहिए। योग की चौड़ाई अर्थात् सर्व संबंध हमारे एक बाप से हों। यह जैसे योग की विशालता है। योग का अर्थ ही है आत्मा का, पिता परमात्मा से कनेक्शन। वह कनेक्शन सर्व संबंधों का एक के साथ हो। यही योग की चौड़ाई है। अगर हमारी रग और कहीं भी जुटी हुई है तो हम योग के गहरे अनुभव नहीं कर सकते। हम योग के गहरे अनुभव तभी कर सकते हैं जब हमारे संकल्प ऊंचे हों, महान हों। अगर हमें बार-बार निगेटिव विचार आते हैं तो योग में विघ्न पड़ता रहेगा और योग की गहराई का अनुभव नहीं होगा। अभी-अभी अनुभव करेंगे, अभी-अभी विघ्न पड़ने से पहले वाली स्थिति में आ जायेंगे तो योग की ऊंचाई का अनुभव नहीं कर सकेंगे। इसलिए हमारे विचार विशाल, ऊंचे, दूरदेशी होने चाहिए। तो योग की स्थिति बनाने के लिए सर्व संबंध सबसे तोड़कर एक से जोड़ें। विचार अच्छे चलते रहें, निरन्तर योग जुटा रहे।

योग अर्थात् हमारी कॉन्शियस क्या है? एक है कॉन्शियसनेस अर्थात् चेतन, दूसरा है अभिचेतन अर्थात् सब कॉन्शियसनेस।

हमें योग के गहरे अनुभव तब तक नहीं होंगे जब तक हम उन सूक्ष्म छिपे हुए भावों को, जो जन्म-जन्मान्तर के संस्कार हमारी वृत्ति-दृष्टि को प्रभावित कर रहे हैं, जिनका हमारी स्मृति से बहुत गहरा कनेक्शन है, उनकी चेकिंग नहीं है तो वह हमें गहरे अनुभव नहीं करने देते।

जिसको हम कह देते हैं कि हमारा यह भाव नहीं था। शब्दों से अगर कोई दूसरी बात समझ लेता है तो हम कहते हैं हमारा यह भाव नहीं था। अन्दर से हमारे संस्कार हमारी एक्टिविटी को प्रभावित करते हैं, जिसका हमें भी ध्यान नहीं रहता है। हमारे संस्कार, हमारी दृष्टि, वृत्ति और एक्टिविटी को प्रभावित करते हैं।

हमारा योग लगातार लगा रहे, टूटे नहीं, हमारे विचार भी अच्छे हों और सर्व संबंध भी हमारे शिवबाबा से हों- यह हम सभी चाहते हैं लेकिन कारण क्या है जो यह स्थिति हमारी बन नहीं पाती है या थोड़ा टाइम बन पाती है और

थी, शब्दों से आपने गलत ले लिया। इसे ही हम संस्कार भी कहते हैं। अन्दर में हमारे जो संस्कार हैं वह हमारी एक्टिविटी को, दृष्टि को, शब्दों को प्रभावित करते हैं। लेकिन हम उसके बारे में स्वयं सतर्क नहीं होते कि हमारा सूक्ष्म में भाव कुछ और था। तो संस्कार को हम अभिचेतन कहते हैं। जिसके बारे में हम पूरे जागृत नहीं होते। योग से उसका गहरा संबंध है। हमें योग के गहरे अनुभव तब तक नहीं होंगे जब तक हम उन सूक्ष्म छिपे हुए भावों को, जो जन्म-जन्मान्तर के संस्कार हमारी वृत्ति-दृष्टि को प्रभावित कर रहे हैं, जिनका हमारी स्मृति से बहुत गहरा कनेक्शन है, उनकी चेकिंग नहीं है तो वह हमें गहरे अनुभव नहीं करने देते। जो चेतन है, जिसकी कॉन्शियस है उसकी चेकिंग तो है ही, उसमें चेकिंग करने की व अटेन्शन देने की बात ही नहीं लेकिन जो सूक्ष्म है, संस्कार रूप में है उसकी चेकिंग चाहिए। पुरुषार्थ में दो बातें कही जाती हैं- एक अटेन्शन दो, दूसरा चेकिंग करो। हम अटेन्शन उस बात पर दें, जो कॉन्शियसनेस है और जो सबकॉन्शियस माइंड है, संस्कार हैं, जो छिपे हुए हमारे भाव हैं, जो हमारी वृत्ति-दृष्टि को प्रभावित करते हैं उनकी चेकिंग करने की जरूरत है।

- क्रमशः



नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी, सूक्ष्म मध्यम और लघु उद्यम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. तारा बहन, राजयोग शिक्षिका, किंग्सवे कैम्प एवं ब्र.कु. फलक बहन, राजयोग शिक्षिका, से. 50 नोएडा।



नेपाल-काठमाण्डू। नेपाल के नवनियुक्त सम्माननीय प्रधानमंत्री के. पी. शर्मा ओली को बधाई एवं शुभकामनाएं देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज राजयोग सेवाकेंद्र नेपाल की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी। साथ हैं अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



हाथरस-उ.प्र.। वात्सल्य ग्राम श्री धाम वृंदावन में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संत, प्रसिद्ध कथावाचक पूज्य दीदी माँ साध्वी ऋतुम्भरा जी से उनके आवास पर मुलाकात कर सनातन संस्कृति के पुनरुत्थान पर चर्चा करने के पश्चात समूह चित्र में ब्रह्माकुमारीज के तपस्याधाम सेवाकेंद्र से ब्र.कु. भावना दीदी, ब्र.कु. सीमा बहन और ब्र.कु. बबिता बहन।



जालंधर-पंजाब। लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में राजयोग थॉट लेबोरेट्री का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए बायें से डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज, ब्र.कु. डॉ. राधिका गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर एलपीयू, ब्र.कु. मुकेश अग्रवाल, राजयोग थॉट लेबोरेट्री हेड, जेईसीआरसी यूनिवर्सिटी, जयपुर, श्रीमती रश्मि मित्तल, प्रो चांसलर लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी तथा डॉ. विशाल शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, डिप्टी डीन ऑफ डिविजन ऑफ स्टूडेंट वेलफेयर।



लंदन। हेडकी रीबर स्विट्जरलैंड के भारतीय राजदूत मृदुल कुमार से मुलाकात के पश्चात् उनके साथ चित्र में डॉ. ब्र.कु. गीता बहन, ब्रह्माकुमारीज, पांडव भवन, माउण्ट आबू तथा अन्य।



शिमला-हि.प्र.। नगर निगम मेयर सुरेंद्र चौहान ज्ञान चर्चा तथा ईश्वरीय साहित्य व प्रसाद भेंट करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. रजनी बहन, ब्रह्माकुमारीज पंथाघाटी सेवाकेंद्र तथा अन्य।



रुदावल-राज.। कथावाचक व्यास नंदराम पंडित जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज उपसेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. पूजा बहन।